❑डिंगळ गीत

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर

बांकीदास आसिया

कवि परिचै

कविराज बांकीदास आसिया रौ जलम वि. सं. 1828 में मारवाड़ रियासत (जोधपुर) रै भांडियावास गांव में होयौ। आप डिंगळ रा चावा-ठावा कवि अर जोधपुर महाराजा मानसिंह रा क्रिपापात्र हा। बांकीदास बहुभासाविद् अर इतियास रा लूंठा जाणकार हा। संस्कृत, डिंगळ, पिंगळ, प्राकृत, अपभ्रंस, फारसी, ब्रज, व्याकरण अर ज्योतिष रा आधिकारिक विद्वान रै रूप में इणां री घणी ख्याति रैयी। बांकीदास महाराजा मानसिंह (जोधपुर) रा क्रिपापात्र तो हा ई, साथै ई राजकवि अर काव्य-गुरु हा। महाराजा उणां नैं महाकवि रै साथै कविराजा रै विरद सूं नवाजिया हा।

इणां रा रचियोड़ा लगै-टगै चाळीस ग्रंथ अर सैकड़ूं डिंगळ गीत मिळै। इणां री भासा प्रौढ़, मंज्योड़ी अर सरस-सहज होवणै रै साथै घणी असरदार है। इणां नैं अलंकारां रौ ई गैरौ ग्यान हौ। डिंगळ रा सिरै रचनाकार बांकीदास रा रच्योड़ा ग्रंथां मांय सूर छत्तीसी, सींह छत्तीसी, वीर विनोद, धवळ पच्चीसी, दातार बावनी, नीति मंजरी, सुपह छत्तीसी, कृपण दर्पण, मोहमर्दन, कुकवि बत्तीसी, गजलक्ष्मी झमाळ, नखशिख, संतोष बावनी, सुजस छत्तीसी, कायर बावनी, कृपण पच्चीसी अर वचन विवेक पच्चीसी आद ग्रंथ घणा चावा है। आं ग्रंथां रै टाळ भुरजाळ भूषण, गंगालहरी, मान जसो मंडण अर बांकीदास री ख्यात घणा उल्लेखजोग ग्रंथ है। इणां रा रच्योड़ा डिंगळ गीत साहित्य अर इतिहास री दीठ सूं सिरै है। अै वि. स. 1890 मांय दिवंगत हुया।

पाठ परिचै

इण संकलन में बांकीदास रौ अेक डिंगळ गीत सामल करीज्यौ है, जिकौ उणां री अंग्रेज विरोधी भावना नैं प्रगट करै। कवि गीत में खरी-खरी बतावतौ कैवै कै अंगरेज आज आपां रै मुलक ऊपर आय रैया है, जिणां नैं रोकण रा जतन करीजणा चाईजै। आपां रा बडेरा जिका धरती रै खातर मर मिट्या पण आपरी धरती दूजां रै हाथां नीं जावण दी। जिका अंगरेजां सूं मोरचा लिया, साम्हीं पग रोपिया, उणां नैं इण गीत में बिड़दाईज्या है। गीत में देस-प्रेम (धरती-प्रेम) री सांगोपांग वंदना करीजी है। कैवण रौ मतळब औ कै राजस्थानी साहित्य जगत में बांकीदासजी अेक लूठां कवि है जिका देस में सब सूं पहला आजादी री अलख जगावण सारू आपरी आवाज बुलंद करी— 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर'। इण महान कवि री देस री आजादी सारू अै ओळियां आम जनता में नूंवौ जोस भरण रौ काम करै।

देस माथै अंगरेजी राज रा बधता दबदबा अर अंगरेजां री 'फूट न्हाखौ अर राज करौ' री खोटी नीत सूं देसी राजावां अंगरेजी सत्ता नैं अंगेजण लागग्या अर अेस-आराम करणौ सरू कर दियौ। आं सगळी बातां सूं सावचेत करतां कवि औ गीत लिख्यौ। इणमें जातीय अेकता री बात ई कवि करी है। देस-रिछ्या रौ भार जनता रै कांधै राखतां कविराज बांकीदास आसिया सगळां नैं चेतावै, चावै हिन्दू व्हौ कै मुसळमान, वीरता किणी री बपौती कोनी।

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहस लीधा खैंचि उरां।
धणिया मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।।1।।

फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळां-डळां।
खंवां खांच चूड़ै खांवद रै, उणहिज चूड़ै गई यळा।।2।।

छत्रपतियां लागी नंह छांणत, गढपतियां धर परी गुमी।
बळ नंह कियौ बापड़ा बोतां, जोतां-जोतां गई जमी।।3।।

दुय चत्रमास बाजियौ दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगौ नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मरैठौ देस।।4।।

बाजियौ भलौ भरतपुर वाळौ, गाजै गजर धजर नभ गोम।
पहिलां सिर साहब रौ पड़ियौ, भड़ ऊभै नंह दीधौ बोम।।5।।

महि जातां चींचातां महिला, अै दुय मरण तणां अवसांण।
राखौ रे किहिंक रजपूती, मरद हिन्दू की मुस्सलमांण।।6।।

पुरजोधांण उदैपुर जैपुर, पहु थांरा खूटा परियांण।
आंकै गी आवसी आंकै, बांकै आसल किया बखांण।।7।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

इंगरेज=अंग्रेज (ब्रिटिस कंपनी)। खांवद=खसम, धणी। मरैठौ=मराठा। भड़=जोधा। यळा=इळा, धरती। दुय=दो, दोय। दोयण=सत्रु। महि=धरती। पुरजोधांण=जोधपुर। बांकै=बांकीदास। बखांण=विरुद, बिड़द, सरावणा।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बांकीदास रौ जलम किण गांव में होयौ ?

   (अ) आलनियावास (ब) भांडियावास

   (स) बीनावास (द) चेलावास

   ( )

2. बांकीदास किण रा क्रिपापात्र हा ?

   (अ) महाराजा अजीतसिंह (ब) महाराजा विजयसिंह

   (स) महाराजा मानसिंह (द) महाराजा जसवंत सिंह

   ( )

1. कवि मुलक रै ऊपर किण रै आवण री बात करै ?

(अ) रंगरेज (ब) चंगेज

(स) मृगराज (द) अंगरेज

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बांकीदास रै रच्यौड़ै किणी दो ग्रंथां रा नांव लिखौ।
2. 'कवि मरण तणां अवसाण किणनै बतायौ है ?
3. बांकीदास रौ जलम चारण समाज री किण साखा में हुयौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि भरतपुर वाळां री तारीफ किण भांत करी है ?
2. बांकीदास रै मुजब अंगरेजां री नीत कैड़ी ही ?
3. कवि 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' गीत में किणरी तारीफ अर क्यूं कीनी ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. अंगरेज हुकूमत सूं चेतावणी देवतौ कवि कांई कैवणौ चावै ? समझावौ।
2. बांकीदास री साहित्य-साधना उजागर करौ।
3. अंगरेज विरोधी गीत 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' रौ सार लिखौ ?

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहस लीधा खैंचि उरां।
   धणिया मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।।
2. बाजियौ भलौ भरतपुर वाळौ, गाजै गजर धजर नभ गोम।
   पहिलां सिर साहब रौ पड़ियौ, भड़ ऊभै नंह दीधौ बोम।।
3. पुरजोधांण उदैपुर जैपुर, पहु थांरा खूटा परियांण।
   आंकै गी आवसी आंकै, बांकै आसल किया बखांण।।